कविता

अकाल और उसके बाद

नागार्जुन

सूचना :" अकाल और उसके बाद" कविता का यह अंश पढ़ें और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखें।

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

(1) कौन रोया हुआ है ?

उत्तर– चूल्हा

(2) चक्की की हालत कैसी है?

उत्तर– चक्की उदास रही है।

(3) भीत पर कौन गश्त करती है?

उत्तर– छिपकलियाँ

(4) कौन शिकस्त में पड़ी है?

उत्तर– चूहा

(5) ' कई दिनों से अकाल पड़ा है। इस कारण चूल्हा रोता है और चक्की उदास है। चक्की और चूल्हे के निकट खाने की प्रतीक्षा में कानी कुतिया सो गई।'–इस आशयवाली पंक्तियाँ कवितांश से चुनकर लिखें।

उत्तर– कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

(6) ' चूल्हे का रोना' और 'चक्की का उदास रहना'– कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

अकाल के कारण कई दिनों से घर में दाना नहीं था। इसलिए खाना पकाने के लिए चूल्हा नहीं जलाता। दाना पिसाने के लिए चक्की का भी उपयोग नहीं करता।

(7) कवि ने अकाल का चित्रण कैसे किया है?

या

कवि और कविता का परिचय देते हुए कवितांश का आशय लिखें।

प्रगतिशील कवि श्री नागार्जुन की एक छोटी सी कविता है ' अकाल और उसके बाद। ' इसमें अकाल के और उसके बाद के समय का मार्मिक चित्रण हुआ है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने अकाल की अभावग्रस्तता का वर्णन किया है। भीषण अकाल के कारण घर में दाना नहीं था। इसलिए खाना पकाने के लिए चूल्हा नहीं जलाता। दाना पिसाने के लिए चक्की का भी उपयोग नहीं करता। चूल्हे और चक्की के क्रमशः चलने की प्रतीक्षा में पड़ी कानी कुतिया उसके पास सो गई थी। भूख से तड़पती छिपकलियाँ कीड़ों की तलाश में भीत पर चलती रहीं। चूहों की भी दशा बहुत बुरी थी।

अकाल के कारण घर के सारे जीव– जंतु भूख से परेशान थे। यहाँ कवि ने निर्जीव वस्तुओं पर (चूल्हे का रोना, चक्की का उदास रहना) मानवीय गुणों का आरोप किया गया है।

सूचना: 'अकाल और उसके बाद ' कविता का निम्न अंश पढ़ें और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखें।

दाने आए घर पर अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठीं घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाईं पाँखें कई दिनों के बाद।

(1) इन पंक्तियों में किस समय का वर्णन हुआ है?
(अकाल का, अकाल के पूर्व का, अकाल के बाद का)
उत्तर– अकाल के बाद का।

(2) ' घर भर की आँखें '– इसका मतलब क्या है?
उत्तर– घरवाले और वहाँ के सारे जीवजंतु ।

(3) कवि ने अकाल के बाद का वर्णन कैसे किया है?
प्रगतिशील कवि श्री नागार्जुन की एक बहुचर्चित कविता है 'अकाल और उसके बाद'। इसमें उन्होंने अकाल के समय और उसके बाद का मार्मिक चित्रण किया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में अकाल के बाद का वर्णन हुआ है। कई दिनों के अकाल के बाद अब घर में दाने आए। खाना पकाने लगा। चूल्हा जलाया तो चिमनी से धुआँ उठने लगा। खाना मिलने से घर भर की आँखें चमक उठीं। यानी सब बहुत खुशी में हैं। कौए को भी खाना मिला और खुशी में वह अपनी पाँखें खुजलाईं।

कई दिनों के अकाल के बाद सब का पेट भर गया और सब सदस्य खुशी में है। ' चमक उठीं घर भर की आँखें कई दिनों के बाद ' द्वारा अभाव की तीष्णता व्यंजित की है।